ओ३म्

पुराणों को पढ़िये तो !

लेखक
वेद, शास्त्र, पुराणमर्मज्ञ
शास्त्रार्थ महारथी
श्री अमर स्वामी सरस्वती

अनुवादक
प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद - २०१००१
(उत्तर प्रदेश)

द्वितीय आवर्त्ति : अक्टूबर २००२ ई० * मूल्य : दो रूपये

शब्द संयोजक - प्रेरणा कम्प्यूटर्स, १६१-ए, बौंझे वाली गली, दिल्ली गेट, गाजियाबाद (यू०पी०)
दूरभाष - ०१२०-४७३६४६७
मुद्रक - एक्सप्रैस प्रिन्ट हाऊस गाजियाबाद ।
प्रकाशक - अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर,
गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)
दूरभाष - ०१२०-४७०१०६५
मूल्य - दो रूपये केवल
संस्करण - द्वितीय आवर्त्ति : अक्टूबर सन् २००२ ई०
लेखक - वेद, शास्त्र, पुराणमर्मज्ञ, शास्त्रार्थ महारथी श्री अमरस्वामी सरस्वती ।
अनुवादक व सम्पादक - प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

Purano Ko Padhiye To
Published by : Karmyogi Lajpat Rai Aggarwal
AMAR SWAMI PRAKASHAN VIBHAG
1058, Vivekanand Nagar, Ghaziabad - 201001 (U.P.)
Phone No. : 0120 - 4701095 * Price : Rs. 2/- only

सम्पादकीय भूमिका

मानवीय सृष्टि का यह नियम है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है, परन्तु ईश्वरीय सृष्टी का नियम इससे सर्वथा अलग है । मनुष्य आवश्यकता पड़ने पर नये-नये अविष्कार करता है, परन्तु परमात्मा ने जीवों के कल्याण के लिये उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सभी अविष्कार आवश्यकताओं से पूर्व ही कर दिये, यथा-प्यास से पूर्व जल बना दिया । पशु, पक्षी, मनुष्य आदि बाद में बने, फल, फूल, वनस्पतियाँ, अन्न पहले ही पैदा किये गये । श्वास के लिये वायु पहले बनी, श्वास लेने वाले बाद में बनाये गये । अग्नि पहले थी, चाँद, पृथ्वी आदि सब पहले बने । इनका प्रयोग करने वाली योनियाँ बाद में निर्मित हुईं ।

इसी प्रकार परमेश्वर ने बुद्धिरूपी आँख के लिए ज्ञानरूपी सूर्य का प्रकाश भी सृष्टी के आदि में ही चार ऋषियों की हृद्य-गुहा में कर दिया । संसार के सबसे पुराने व ईश्वरीय ग्रन्थ होने से सम्पूर्ण मानव समाज वेद को पढ़ता, पढ़ाता व सुनता, सुनाता आया है । सम्पूर्ण सृष्टि में ज्ञान के आदि स्रोत वेद के प्रति श्रद्धा व पूजा का भाव रहा, परन्तु स्वार्थी व धर्मद्वेषी मनुष्यों को यह अच्छा न लगा । ऐसे मन्दभागी लोग संसार को ईश्वर से विमुख करने के उपाय सोचने लगे । जब सूर्योदय होता है तो अन्धेरे से प्रेम करने वाला एक प्राणी सूर्य पर पक्षपात, क्रूरता व अन्याय करने के दोष लगाता है । सद्ज्ञान वेद से चिढ़ने वाले भी वेद पर दोष लगाकर मनुष्य समाज को भ्रमित करने के यत्न करने लगे ।

इन चालाक लोगों ने 'हींग लगे ना फिटकरी , बस रंग चोखा हो जाए' की उक्ति के अनुसार लोगों को धर्मच्युत् करने का एक सरलतम उपाय निकाल ही लिया । इन्होंने देखा कि लोग वेद को अनादि, सनातन व पुराने-से-पुराना होने के कारण मानते व पूजते हैं । पुराने सूर्य का कोई विकल्प नहीं । पुराने जल, अग्नि व वायु के पुरातन सनातन नियमों का कोई विकल्प नहीं । इनके बिना काम नहीं चलता । पुराने वेद-ज्ञान के बिना भी मनुष्य का काम नहीं चल सकता । लोग इस अटल नियम को जानते थे । स्वार्थी, धूर्त्त लोगों ने पुराण नाम से नूतन ग्रन्थ गढ़-गढ़कर लोगों को भ्रमित किया कि देखो ये पुराने ग्रन्थ हैं, यही पुरातन रीति है, यही सनातन धर्म है । झूठ का प्रचार इतने प्रबल वेग से किया गया कि कालान्तर में करोड़ों लोग ईश्वर के पुरातन, सनातन, अनादि वेद-ज्ञान को तो भूल गये और ऋषियों मुनियों को कलंकित करने वाले पुराणों को ही पुराने सनातन धर्मग्रन्थ मान लिया । हिन्दूजाति ऐसी पथभ्रष्ट हुई कि उसने ईश्वर के वेदादेश को ठुकराकर पौराणिक रूढ़ियों, कुरीतियों, सृष्टि-नियम विरूद्ध कहानियों को, गप्पों को ही धर्म मान लिया ।

महर्षि दयानन्द ने जब भागवत् में श्री कृष्ण महाराज के सम्बन्ध में घटिया अश्लील कहानियाँ सुनीं, पढ़ी तो उनका कलेजा फट गया । महाभारत में शिशुपाल ने श्रीकृष्ण को एक सौ गालियाँ दीं, परन्तु वे दोष श्रीकृष्ण पर नहीं लगाये जो भागवत् पुराण व अन्य पुराणों में हैं । इससे महर्षि दयानन्द ने पुराणों के विरुद्ध अपना सिंहनाद किया । महर्षि का घोष है कि ऋषि-मुनियों का, पूर्वजों का, श्रीराम व कृष्ण का अपमान नहीं सहा जा सकता । कृष्ण का अपमान करने वाले पुराण त्याज्य हैं । बस यह सुनते ही पौराणिकों ने देखा कि अब तो चोर पकड़ में आ जायेगा । चोर को कैसे बचाया जाए ?

उन्हें भी बड़ी दूर की सूझी । उन्होंने भी 'चोर मचाये शोर-चोर ! चोर !!' की उक्ति के अनुसार शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया । महर्षि दयानन्द व उनकी शिष्य मण्डली पर श्रीराम-कृष्ण आदि महापुरुषों की निन्दा का दोष लगाकर अपना अपराध छुपाने व अपनी जान बचाने में लगे । पुराणों में कई अच्छे नैतिक उपदेश भी हैं । मूर्त्तिपूजा आदि बुराइयों का खण्डन भी मिलता है । 'पाषाण पूजकों को गधा व भार ढ़ोने वाला बैल भी लिखा है ।' कुछ इतिहास सम्बन्धी मूल्यवान् सामग्री भी है । कुछ अलंकार भी होंगे, परन्तु ऋषियों मुनियों की उत्पत्ति, देवी-देवताओं के लड़ाई-झगड़े, लिंग-योनि विषयक गाथा, परस्त्रीगमन, पशुओं से महापुरुषों की उत्पत्ति के प्रसंग पढ़ते हुए लज्जा आती है । विधर्मी इन्हीं गाथाओं को पढ़-पढ़कर आर्य जाति पर प्रहार पर प्रहार करते चले आये हैं ।

एक ईसाई लेखक के ये शब्द पढ़िये और फिर कहिये कि महर्षि दयानन्द भागवत् पुराण के रचने वाले की जान को रोते या ना रोते ? महर्षि का रूदन इन पक्तियों को पढ़कर समझ में आ जाएगा । 'श्री जान मर्दोच' ने श्री कृष्ण के बारे में अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है-

"The popular idea of him is found in the Bhagvad Purana. He is represented as mischievous and disobedient as a child, guilty of theft and lying, stealing the clothes of the gopis and sporting with them, as having 8 queens and 16000 wives, who burnt up kasi, destroying the inhabitants and who finished his course by slaying a great number of his 18000 sons."*

---

* The Religious History of India, Page 128. लन्दन व मद्रास से सन् १६०० ई० में प्रकाशित हुई पुस्तक । -'लाजपत राय अग्रवाल'

अर्थात् उसके बारे में लोकप्रिय विचार भागवत् पुराण में पाया जाता है । वहाँ उसे उच्छृखंल और आज्ञा का पालन न करने वाले बालक के रूप में, चोरी व झूठ बोलने का अपराधी, गोपियों के वस्त्र चुराने वाला और उनसे क्रीड़ा करने वाला, आठ रानियों और १६०० पत्नियों को रखने वाला दर्शाया गया है, जिसने काशी को फूँक दिया, वहाँ के निवासियों को विनष्ट किया और जिसने अपने अभियान को १८००० पुत्रों में से अधिकांश संख्या के वध के साथ समाप्त किया ।

ये सब दोष लगाकर ईसाई लेखक घबराया, थर्राया । उसे स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी योगेन्द्रपाल आर्य विचारक दिखाई दिये ।

उसके सामने सत्यार्थप्रकाश व पण्डित लेखराम द्वारा लिखित साहित्य आया । तब उसे महर्षि के भाव अपने शब्दों में देने पड़े । वह लिखता है-

"In the Bhagvad Gita, included in the Bishma Parva of the Mahabharata, there is no reference to the disgraceful conduct of Krishna as described in the Puranas, but he discourses to Arjuna on the Vedanta philosophy."+

हम अपनी लेखनी को विराम देते हुए जाति प्रेमी, धर्म प्रेमी, प्रबुद्ध पाठकों से कहेंगे कि वे 'श्री जान मर्दोच ' के शब्दों का महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश* में दिये गये श्रीकृष्ण विषयक उद्‌गारों व विचारों से तुलना करके बतायें कि क्या वे वाक्य एक ईसाई के मन में वैदिक धर्म की गूँज नहीं है ? श्री जान भी महर्षि दयानन्द के साथ स्वर मिलाकर श्रीकृष्ण को निष्कलंक घोषित करते हैं ।

+ द्रष्टव्य वही पृष्ठ १२८ ।

* द्रष्टव्य सत्यार्थप्रकाश, पं० युधिष्ठिर जी मिमांसक द्वारा सम्पादित सत्यार्थ प्रकाश का शताब्दी संस्करण, पृष्ठ २२६-५३० -'लाजपत राय अग्रवाल'

अब हम पाठकों से कहेंगे कि वे हमारे सद्भावों को तथा हमारी अन्तःवेदना को समझें, अनुभव करें और पुराणों को विचारपूर्वक है पढ़ें । देश धर्म की रक्षा के लिये कटिबद्ध हों । यही कल्याण का मार्ग

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, शास्त्रार्थ महारथी 'श्री अमर स्वामी जी' की यह पुस्तिका सन् १६३५ ई० में उर्दू में छपी थी । अब ६ वर्षों बाद हमने इसका अनुवाद जनहित में किया है ।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

इस विषय में अनेकों व्यक्तियों के कथन आपको विभिन्न रूपों में मिलेगें, कोई कहेगा कि-मैं सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर आर्य समाजी बना, कोई कहेगा - अमुक विद्वान के सम्पर्क में आने पर आर्य समाजी बना, कोई कुछ कहेगा, तो कोई कुछ कहेगा, परन्तु महात्मा अमर स्वामी जी महाराज कहते थे कि -"मैं पुराणों को पढ़कर आर्य समाजी बना" अर्थात् मैंने जब पुराणों की गन्दगी को देखा, पढ़ा और विचारा तो मुझे उनसे घोर नफरत हो गयी और मैं आर्य समाजी बन गया, आप भी पुराणों को कम से कम एक बार अवश्य पढ़िये ।

निवेदक - "कर्मयोगी - लाजपत राय अग्रवाल"
(प्रतिष्ठाता)
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
(गाजियाबाद)

पुराणों में क्या है ?

पुराणों को क्यों मानें ? - पुराणों और पौराणिकों से हमारी किसी पूर्वजन्म की शत्रुता नहीं है तथापि हम पुराणों का विरोध ही करते हैं और मैं तो इनका इतना विरोधी हूँ कि यदि मैं सनातनधर्मी भी होता तो भी पुराणों को कतई न मानता । संसार में ऐसा कौन-सा मनुष्य होगा जो अपने माता, पिता, पितामह, गुरुओं, आचार्यों तथा ऋषियों-महर्षियों पर दोषारोपण करने को अच्छा जाने ? भले ही किसी के पूर्वज कितने भी बुरे क्यों न हों तथापि कोई मनुष्य उनकी निन्दा करना व सुनना पसन्द नहीं करता । सुपुत्र की तो बात ही क्या कुपुत्र-से-कुपुत्र तथा निर्लज्ज मनुष्य भी यह सहन नहीं करता है कि उसके सामने उसके पूर्वजों पर कोई इस प्रकार के दोष लगाये ।

छी ! छी ! ऋषियों का अपमान - कहाँ यह कि कोई और उनका जीवन लिखे और उसमें उन पर घृणित-से-घृणित दोष लगाए और उनके वंशज उन पुस्तकों को प्रकाशित, प्रचारित और प्रसारित करें, क्रय करें और उनकी कथाएँ भी करवायें । विशेष बात यह है कि यह उस स्थिति में है जबकि वे पूर्वज उच्च आचरण, निर्मल जीवन, स्वच्छ व्यवहार और पवित्र विचार वाले हों । उन पर अश्लील दोष लगाए जाते हैं और दोष भी साधारण से नहीं प्रत्युत ऐसे दोषारोपित किये जाएँ जिन्हें कोई सज्जन पुरुष अपने शत्रु पर भी लगाना उचित न समझे । या यह कहिए कि ऐसे दोष जिन्हें विरोधी पर भी लगाने से पूर्व एक सज्जन को सौ बार सोचना पड़े ।

स्वाभिमानी जातियाँ क्या करती हैं ? - संसार की प्रत्येक स्वाभिमानी जाति जिसमें थोड़ी-सी भी बुद्धि व ज्ञान हो, वह अपने पूर्वजों पर लगाए गये प्रत्येक कलंक को मिटाने का प्रयास

करती है । इस्लामी-साहित्य में हदीसों व कुछ अन्य पुस्तकों में भी ऐसी सामग्री पाई जाती है जिनसे हज़रत मुहम्मद साहब व अन्य मुसलमान पूर्वजों पर कई दोष आते हैं । आज प्रत्येक मुसलमान भले ही वह किसी भी सम्प्रदाय का हो, ऐसी हदीसों की सच्चाई को स्वीकार नहीं करता । ऐसा साहित्य अमान्य घोषित किया जा रहा है*। इन्हें मान्यता देने के लिये कोई भी कतई आगे नहीं आता । ऐसी पुस्तकों का खण्डन करते हुए व्याख्याता व्याख्यान दे रहे हैं । पत्र-पत्रिकाओं में लेख छप रहे हैं । बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जाते हैं। मौलाना मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब की पुस्तक 'हफ्वात-उल-मुसलमीन'+ ऐसी ही पुस्तकों में से एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसमें ऐसी अनेक पुस्तकों के प्रमाण उद्धृत किये गये हैं जो आपत्तिजनक व हटाने योग्य हैं ।

पौराणिक कभी मुसलमानों से टकरायें ? - परन्तु अत्यन्त खेद व दुःखी हृदय से यह लिखना पड़ता है कि हमारे सनातनधर्मी भाई उन पुराणों को जिनमें कि हमारे पूर्वजों, ऋषियों व महर्षियों पर अश्लील-से-अश्लील दोष थोपे गये हैं-इस प्रकार छाती से चिपकाये बैठे हैं जैसे बन्दरिया अपने मृत बच्चे को चिपकाये रखती है । यह शत-प्रतिशत सत्य बात है कि जब तक सनातनधर्मी इन पुराणों को मानने से इन्कार नहीं करेंगे तब तक वे आर्यसमाज, ईसाइयत व इस्लाम के सामने खड़े होने का साहस कर ही नही सकते । यही कारण है कि आज तक पौराणिक विद्वान ईसाइयत व इस्लाम के सामने खड़े ही नहीं हुए* । यही कारण है कि आज तक

---

* सर सैयद अहमद खाँ तथा डॉ० गुलाम जेलानी तो हदीसों को सिरे से ही नहीं मानते । इन्हें सबल युक्तियों से झुठलाया जा रहा है ।

\+ यह पुस्तक आपको 'अमर स्वामी प्रकाशन विभाग' के विक्रय विभाग से प्राप्त की जा सकती है । "कर्मयोगी-लाजपत राय अग्रवाल"

सनातनधर्म का ईसाइयत व इस्लाम से एक भी शास्त्रार्थ नहीं हुआ। आर्यसमाज के सामने कभी-कभी विवशता के कारण खड़ा होना पड़ता है। इसमें भी पहले तो टालमटोल ही की जाती है। जब किसी प्रकार भी न टले और सिर पर ही आ बने तो फिर शास्त्रार्थ के बीच में गड़बड़ डालकर उसको बन्द करा देना तो बहुत प्रबल व अन्तिम हथियार है।

जब पोल खुलती है तो ?- गतवर्ष पण्डित माधवाचार्यजी शास्त्री से 'बद्दोमल्ली' जिला-स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में मेरे दो शास्त्रार्थ होने निश्चित हुए थे। दोनों पक्षों में लिखा पढ़ी हो गई। प्रतिष्ठित मुसलमानों के भी उस पर हस्ताक्षर हुए। प्रथम दिन शास्त्रार्थ हुआ। मैंने पुराणों पर ऐसे आक्षेप क़िये जिनमें से एक का भी पण्डित माधवाचार्य के पास उत्तर न था। इसलिए दूसरे दिन शास्त्रार्थ में गड़बड़ मचाने लगे और तीसरे दिन पुलिस में रिपोर्ट करवाकर शास्त्रार्थ ही बन्द करवा दिया+।

एक दुःखद घटना - इसके कुछ दिनों के पश्चात् आर्यसमाज बद्दोमल्ली के उत्सव पर पण्डित बुद्धदेवजी मीरपुर शास्त्रार्थकर्त्ता के रूप में निश्चित किये गये थे और मैं शास्त्रार्थ का प्रधान था। पण्डित

* माधवाचार्य, कालूराम, राजनारायण, ज्वालाप्रसाद आदि सब पौराणिक विद्वानों ने महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज को गालियाँ दे-देकर ही पापी पेट को भरने का धन्धा जीवन भर किया परन्तु कभी भी उन्होंने ईसाई या मुसलमानों के उत्तर-प्रत्युत्तर में एक ट्रेक्ट तक भी नहीं लिखा।

\+ 'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ में इस शास्त्रार्थ की तिथि व सन् १९४१ ई० जो अशुद्ध छप गया है। यह सन् १९३४ ई० में हुआ था। यह शास्त्रार्थ निर्णय के तट पर ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में छपा हुआ है। शास्त्रार्थ की समाप्ति पर वहाँ की सनातन धर्म सभा के प्रधान, स्टेशन मास्टर श्री बाबू लेखराजजी' ने भरी सभा में यह घोषणा की थी कि - "मैं आज से सनातनधर्मी नहीं रहा।" यह प्रभाव इस शास्त्रार्थ का हुआ था।

"कर्मयोगी-लाजपत राय अग्रवाल"

माधवाचार्यजी ने गोसाईं गंगाधर को गड़बड़ मचाने के लिये खड़ा कर दिया। उन्होंने अपना पार्ट बहुत अच्छी तरह से अदा किया और शास्त्रार्थ नहीं होने दिया। ईसाइयों, मुसलमानों, मिर्ज़ाइयों व सिखों आदि सबने कहा कि आप लोग समय नष्ट कर रहे हैं, परन्तु उन्होंने एक न मानी। अन्ततः थानेदार ने आदेश दिया कि अविलम्ब पण्डाल से बाहर चले जाओ। तब सभी सनातनधर्मी पण्डाल से बाहर चले गये और इस प्रकार सनातन धर्म की जय मनाते हुए अपने-अपने घर पहुँचे।

आदि से अन्त तक दो-चार पुराण अवश्य पढ़िये - इस वर्ष मार्च सन् १९३५ ई० में एक ही समय में ऊधमपुर व होशियारपुर में शास्त्रार्थ हो रहे थे। ऊधमपुर में आर्यसमाज की ओर से पण्डित बुद्धदेवजी मीरपुरी के सामने पण्डित माधवाचार्य व श्रीकृष्णजी शास्त्री थे। वहाँ इन दोनों महानुभावों ने गड़बड़ मचाकर शास्त्रार्थ समाप्त करवाया। होशियारपुर में आर्यसमाज की ओर से पण्डित गंगाशरण और मैं था और पौराणिकों की ओर से पण्डित कालूराम व पण्डित अखिलानन्दजी ने अपने स्वाभाव के वशीभूत होकर हमें जी भरकर गालियाँ दीं और झगड़ा करवाकर शास्त्रार्थ बन्द करवा दिया। पुराणों का भार जब तक सनातनधर्म की पीठ पर रहेगा तब तक सनातन- धर्म की कमर अवश्य टूटती ही रहेगी। जो भी व्यक्ति दो चार पुराणों को आदि से अन्त तक पढ़ लेगा, वह अवश्य आर्यसमाजी बन जायेगा, यह मेरा दावा है।

पुराणों पर विश्वास डगमगा जाये तो ?- यदि किसी सांसारिक कारण से ऐसे व्यक्ति को सनातनधर्मी ही कहना और रहना पड़े तो भी पुराणों पर उसका विश्वास नहीं रह सकता। जिसका विश्वास ही नहीं रहा, वह शास्त्रार्थ क्या करेगा ? अतः जहाँ भी शास्त्रार्थ का चैलेंज किया जाता है वहीं कोई-न-कोई बहाना बनाकर इस विषय से इन्कार कर दिया जाता है। इसी कारण अन्य विषयों

से भी कतरा जाते हैं ।

पुराणों की कुछ प्यारी-प्यारी सुन्दर बातें - सज्जनवृन्द ! यहाँ उदाहरण के लिये पुराणों की कुछ चुनी हुई महत्वपूर्ण बातें इस पुस्तिका में दी जाती हैं । इन्हें पढ़िये और तनिक विचारिये । श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ने गीता में कहा है -

यद् यदा चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते *।।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा-जैसा आचरण करता है संसार का साधारण पुरुष भी वैसा-वैसा ही उसका अनुसरण करता है । जिस वस्तु को वह प्रमाण मानकर, आदर्श मानकर चलता है, संसार भी उसी का अनुसरण करता है, अब पुराणों में भी इस महापुरूषों के कारनामे देखिये और विचारिये कि क्या इनका अनुसरण किया जा सकता है ? -

(१) समरथ को नहीं दोष गोसाईं ?- इस वाक्य को कहने और इस नियम को मानने वालों ने श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज की सोलह हजार स्त्रियाँ पुराणों में लिखी हैं । श्री कृष्णचन्द्रजी गीता में कहते हैं कि - 'मैं कितने ही कार्य केवल इसीलिये करता हूँ कि मुझे देखकर लोग भी वैसा ही करें ।' मैंने पण्डित माधवाचार्यजी से पूछा कि क्या यह कार्य श्री कृष्णचन्द्रजी ने इसलिये किया था कि मेरे भक्त भी इसी प्रकार सहस्त्रों स्त्रियों से विवाह करें । इसका उत्तर सारे पौराणिक एक ही देते हैं, वही उन्होंने भी दिया । *वह यह है कि*- 'समर्थवान् को कुछ दोष नहीं ।' सामर्थ्य का अर्थ यदि बल है तो सीधी बात है कि संसार में जितने भी पाप हैं उन्हें वही लोग करत हैं जिनमें उन्हें करने का सामर्थ्य होता है । उदाहरण के लिये किसी भी नपुंसक को कभी व्यभिचार करते हुए नहीं देखा गया । इस नियम

* दृष्टव्य श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय ३, श्लोक ११ - 'लाजपत राय अग्रवाल'

के अनुसार तो 'सब पापों को उनके करने का सामर्थ्य रखने वाले ही करते हैं । दोषी तो निर्बल हो सकता है'- और सामर्थ्य वाले को कोई दोष नहीं । दोष तो तब होता है जब सामर्थ्यहीन कोई व्यक्ति किसी प्रकार का पाप करे । अर्थात् व्यभिचार का दोष जब होगा यदि कोई नपुंसक होते हुए ऐसा कुकर्म करेगा । अन्यथा दोषी दशा में 'समर्थ को नहीं दोष गोसाईं' । इसमें क्या रहस्य छुपा हुआ है ? यह तो हमारे सनातनधर्मी भाई ही बतला सकते हैं ।

(२) अब पुराणों को देखिये - इसके अतिरिक्त भागवत् में श्री कृष्णचन्द्र पर परस्त्रीगमन का दोष लगाया गया है और प्रश्न उठने पर यही उत्तर जो ऊपर दिया गया है, अर्थात् 'समर्थ को नहीं दोष गोंसाई' वहाँ दिया है ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है कि वायु ऋषि की पत्नी को देखकर श्री कृष्णचन्द्रजी का कामबाण से पीड़ित होने पर वीर्यपात हो गया । देवों की सभा में लज्जावश उन्होंने इस वीर्य को जल में डाल दिया । छीः ! छीः ! योगीराज श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज जो हमारे एक आदर्श पुरुष हैं उन पर इतना गन्दा और अभद्र दोष ! क्या योगियों को ऐसे वीर्यपात हुआ करता है ? जैसा इस गये बीते युग के बाज़ारी व्यक्तियों को भी नहीं होता । वे तो गीता में अर्जुन को कहते हैं कि- 'यह काम बैरी है । इसको त्यागना चाहिये ।' कहिए ! अब क्या कहना है ? क्या पुराण के इस लेख को सत्य माना जाये ? नहीं, नहीं, कदापि नहीं । श्रीकृष्णजी महाराज ऐसे नहीं थे । यह दोष अवश्य ही उनके किसी शत्रु ने लगाया है । यद्यपि वह उनका व्यक्तिगत शत्रु नहीं तथापि हमारी संस्कृति का शत्रु तो अवश्य है ।

(३) ब्रह्माजी पर भी दोषारोपण ? - चारों वेदों के ज्ञाता ब्रह्माजी का वीर्यपात ब्रह्मवैवर्त पुराण में पढ़िये । वहाँ लिखा है कि रति को देखकर ब्रह्माजी का वीर्यपात हो गया और लज्जा के मारे उस महायोगी ने उसे वस्त्र में छुपा लिया । कहिये ! एक चारों वेदों का

विद्वान् और केवल विद्वान ही नहीं बल्कि क्या कोई महायोगी ऐसा हो सकता है ? यह ब्रह्माजी पर मिथ्या दोषारोपण नहीं तो और क्या है ?

(४) शिवपुराण भी दोषारोपण में पीछे नहीं रहा – ब्रह्माजी का पुनः वीर्यपात शिवपुराण में भी लिखा है। महायोगी श्री शिवजी और महातपस्विनी सती पार्वती का विवाह संस्कार हो रहा था। चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान ब्रह्माजी पुरोहित के आसन पर विराजमान थे। इच्छा जागी कि किसी प्रकार पार्वतीजी का मुख देखें, सो हवनकुण्ड में जल गिरा दिया जिससे अग्नि बुझ जाए, धुआँ फैले और धुआँ होने पर पार्वतीजी मुँह उघाड़ें। ऐसे मुखड़ा देख लेंगे। ऐसा ही हुआ। ब्रह्माजी ने झट से पार्वतीजी का मुख देख लिया। मुखड़ा देखते ही ब्रह्मा जी का वहीं विवाह मण्डप में वीर्यपात हो गया।

यह कैसी लज्जाजनक बात है ? आप लोग तनिक तो विचार करें कि क्या हमारे ऋषि-महर्षि पूर्वज ऐसे ही थे ? नहीं, कदापि नहीं।

(५) शिवजी भी नहीं बचे – महायोगी शिवजी महाराज के वीर्यपात की भी पुराणों में चर्चा है। शिवजी महाराज का तो कई बार वीर्यपात हुआ। ऐसा पुराणों में अनेकों स्थलों पर लिखा हुआ मिलता है। शिवपुराण में लिखा है कि एक बार उसे अग्नि ने खा लिया। अग्नि देवों का मुख है। अतः सारे देवों को गर्भ ठहर गया। कितनी लज्जा की बात है ? क्या ये ऊट-पटांग बातें कोई मानने के लिये तैयार होगा ? इसलिये मेरी प्रार्थना है कि पौराणिक बन्धुओं ! इन मिथ्या दोषों से अपने पूर्वजों को बचाओ।

(६) महर्षि वेदव्यास को भी यही रोग बताते हैं – देवी भागवत में यह लिखा है कि महर्षि वेदव्यास का एक अप्सरा को देखते ही वीर्यपात हो गया। इसी से शुकदेवजी की उत्पत्ति हुई।

(७) महाभारत की भी सुनिये – महाभारत में लिखा है कि गौतम मुनि का जनपदी अप्सरा को देखते ही वीर्यपात हो गया, जो

एक सरकण्डे पर जाकर गिरा और उससे कृपाचार्य और कृपी नाम की कन्या जन्मी। वही कृपी नाम की स्त्री कृपाचार्य से ब्याही गई।

(८) महाभारत में ही और भी देखिये – महाभारत में आया है कि कश्यप मुनि ने एक सरोवर के तट पर स्नान करती हुई उर्वशी नाम की एक अप्सरा को देख लिया। बस ! फिर क्या था ? दृष्टि पड़ते ही मुनिजी का भी वही हाल हुआ जो भगवान् श्री कृष्णचन्द्रजी, ब्रह्मा जी, वेदव्यासजी, शिवजी और गौतम मुनि का पुराणकारों ने लिखा है। कश्यप मुनि का वीर्य भी व्यर्थ नहीं गया। सरोवर में जा गिरा। उसे जल के साथ एक हरिणी ने पी लिया और वह गर्भवती हो गई और उसने 'शृंग ऋषि' को जन्म दिया।

(९) कश्यप मुनि पुनः फंस गये – ब्रह्मवैवर्त पुराण में ही कश्यप मुनिजी की एक ऐसी घटना दी है कि वृषली नाम की एक साधारण कुल की स्त्री ने कश्यप मुनि से वीर्यदान माँगा। ऋषि ने उसको दुत्कार दिया तभी वहाँ एक अप्सरा प्रकट हो गई जिसे देखते ही ऋषि डोल गये और उनका वीर्यपात हो गया। वही वृषली जो वहाँ डटी बैठी थी झट से उसे पी गई जिससे नारदजी की उत्पत्ति हुई। बन्धुओं ! तनिक सोचिये तो !! कुछ तो सोचो !!! क्या हमारे ऋषि ऐसे ही थे ? यदि थोड़ी-सी बुद्धि व थोड़ी सी विद्या से भी काम लिया जाए तो अवश्य ही कहना पड़ेगा कि यह हमारी सभ्यता के घोर विरोधियों ने ही हमारे उन पूज्यों पर दोष लगाये हैं अन्यथा क्या ऋषियों की यही पहचान है ? और ऐसी बात यदि किसी की सच भी हो तो क्या उनके सपूतों का यही परम कर्त्तव्य है कि ऐसी-ऐसी बातों को लिखवा कर, छपवा कर उसकी कथा करवाएँ ? और इस प्रकार सरेआम अपने पूर्वजों का अपमान करवाएँ ?

(१०) आर्यों की अन्तः वेदना – हमारे पौराणिक बन्धुओं ! हम आर्य लोग इन ऋषि-मुनियों को केवल आप ही के आदरणीय पूर्वज नहीं मानते प्रत्युत् वे हम सबके-हमारे भी और आपके भी पूज्य

थे, अतः इन अश्लील मिथ्या कथाओं को पढ़कर हमारे हृदय को तब गहरी चोट लगती है जब हम उनके ऊपर ऐसे-ऐसे गन्दे आरोप सुनते व पढ़ते हैं। परमात्मा जाने मेरे सनातन धर्मी भाइयों के हृदय किस तत्व के बने हुए हैं ? परन्तु तब जब कोई आर्यसमाजी इन गन्दी-गन्दी कथाओं की चर्चा छेड़े तो और कहे कि - 'देखो पुराणों में ऐसा लिखा है।' तब प्रत्येक सनातन धर्मी कहता है कि देखो जी ! आर्यसमाजी हमारे देवों को गालियाँ देते हैं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारे इन भूले, भटके, भ्रमित भाइयों को सद्बुद्धि दे जिससे यह हानि-लाभ, बुराई-भलाई में भेद कर सकें।

(११) हा ! पाप कर इतना बोझ - प्यारे पौराणिक भाइयों ! सोचो-विचारो और अपनी जाति के पूर्वज महापुरुषों, ऋषियों व पूर्वजों पर लगाए गये कलंकों को दूर करो। नहीं तो आापकी गर्दनों पर बड़ा भारी पाप का भार होगा। जो किसी प्रकार भी उतारा न जा सकेगा। इससे हमारे देश और जाति को भारी हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप अपनी जाति का, देश का व सारे संसार का कल्याण चाहते हो तो इन पुराणों को अति शीघ्र तिलांजलि दे दो। मैंने यह पुराणों का थोड़ा-सा नमूना **(Sample)** दिखाया है। विस्तार से जानने के लिये आप स्वयं ही पुराणों को पढ़िये, तब आप ही निर्णायक स्थिति में पहुँच जायेगें।

विशेष टिप्पणी - अन्तिम पंक्तियों में लेखक ने पुराणों की सच्चाई में विश्वास करने वाले समस्त पौराणिकों को लिखित व मौखिक शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। हम ऐसे पौराणिक भाइयों से कहेंगे कि यदि अब भी वे पुराणों में आस्था रखते हैं तो वे एक बार 'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ को पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर आदि से अन्त तक अवश्य पढ़ें, जिसे तैयार कराने में हमारे उत्साही, आर्य वीर, कर्मठ "लाजपत राय अग्रवाल" जी ने विशेष परिश्रम का परिचय दिया है।

निवेदक - "प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु"